ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14
Vol.-5, No.-I, PP-221-224, YEAR JUNE 2016

वरिष्ठ नागरिकों के सामाजिक संयोजन में सामाजिक मूल्यों का प्रभाव

❑ धर्मेंद्र कुमार

सार– *भारतीय समाज की सामाजिक व्यवस्था में मूल आधार वरिष्ठ नागरिकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। समकालीन नगरीय औद्योगिक समाजों में वरिष्ठ नागरिकों का जीवन लगातार संकटग्रस्त हो रहा है। वरिष्ठ नागरिक की परम्परागत प्रतिष्ठा शक्ति और सत्ता का लगातार विलुप्त हो रहा है। परम्परागत समाज में वरिष्ठ नागरिक का परिवार, जाति, समाज और समुदाय में वरिष्ठ स्थान प्राप्त था। लेकिन आधुनिकता के दौर में आर्थिक परिवेश और नगरीय औद्योगिक संरचना में वरिष्ठ नागरिक का स्थान नहीं रह गया है। बढ़ती उम्र के साथ–साथ वरिष्ठ नागरिक लगातार शिथिल होता जा रहा है, और उसकी आर्थिक स्थिति भी अत्यन्त कमजोर होती जा रही है। इस प्रकार वरिष्ठ नागरिक सामान्यतः पराश्रित जीवन व्यतीत करने लगता है। परिवार में उसकी सेवा अपेक्षा के अनुरूप नहीं होती है, क्योंकि वह आर्थिक रूप से निर्बल है। दूसरी ओर नगरीय औद्योगिक संस्कृति में व्यक्तिवादिता की वृद्धि हो रही है। परिवार के युवा और बालक शिक्षा ग्रहण में संलग्न है अर्थात परिवार में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा और रोजगार के माध्यम से अपने कैरियर के बारे में प्रयासरत है। ऐसे अवस्था में वरिष्ठ नागरिक की उपेक्षा हो रही है।*

उत्तर आधुनिकता की ओर अग्रसर होते समाज में नवीन वैचारिकी एवं मूल्यों का समावेश समाज की संरचनात्मक व्यवस्था को निर्धारित करते है। कैरियर एवं कार्योजन के चलते पारिवारिक सदस्यों की गतिशीलता बढ़ती जा रही है। वहुधा पुत्र अत्यन्त जाकर जीविकोपार्जन कर रहा है न वह माता–पिता को साथ में रखता है और न ही उसके पास इतना समय ही उपलब्ध है कि अपने वृद्ध माता–पिता की समुचित देखभाल कर सके। निरन्तर वरिष्ठ नागरिकों को प्राप्त होती शारीरिक, मानसिक, शिथिलता सामाजिक कर्तव्यों की निर्वाह एवं सहभागिता को प्रभावित करती है जो वरिष्ठ नागरिकों में असुरक्षा को बढ़ाती है एवं पराश्रियता को निर्मित करती है। वरिष्ठ नागरिक अपनी विभिन्न अवस्थाओं में समायोजन सम्बन्धी परिस्थितियों का सामना करते है।

नवीन सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों के कारण भारतीय समाज में वरिष्ठ नागरिकों की परम्परागत देखभाल की व्यवस्था परिवर्तित हो रही है। संयुक्त परिवार व्यवस्था का न तो बने रहना संभव है और न ही वरिष्ठ नागरिकों के प्रति परम्परागत मूल्यों का नगरीय क्षेत्रों में कैरियर और कार्योजन के कारण, परिवारिक सदस्यों की गतिशीलता में वृद्धि हुई है। उपभोक्तावादी मूल्यों तथा स्वार्थी मनोवृत्ति के कारण वरिष्ठ नागरिक एकांकी जीवन व्यतीत करने के लिए वाध्य हुए है। आज वरिष्ठ नागरिकों के समक्ष अनेकों समस्यांए है। जिनमें आर्थिक समस्या, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या, तथा सामाजिक मनोवैज्ञानिक समस्यांए प्रमुख है। वृद्धावस्था में व्यक्ति को कई प्रकार के परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जिनके कारण समस्याएं उत्पन्न होती है। इनमें से सर्वाधिक प्रमुख समस्यांए जीवन साथी की मृत्यु, शारीरिक शक्ति का ह्रास, विभिन्न बीमारियों से ग्रस्त होना, शारीरिक निर्भरत। आर्थिक हानि या आय में कमी, सामाजिक परिस्थिति का ह्रास या मृत्यु का भय है।

सामाजिक परिस्थिति में परिवर्तन, भूमिका में ह्रास, भौतिक साधनों का वंचित होना तथा पारिवारिक शाक्ति संरचना में परिवर्तन आदि तनाव उत्पन्न होती है तो ये जब परिवार में पीढ़ीगत विषमताएं उत्पन्न होती है तो ये सभी तनाव आश्रयदाता एवं वरिष्ठ नागरिक दोनों ही के द्वारा अनुभव किया जाता है। वरिष्ठ नागरिक जैसे–जैसे वृद्ध होते जाते है वे अपने पति और पत्नी एवं मित्रों को खोते जाते है और परिवार पर पहले

उच्चतर माध्यमिक शिक्षक समाजशास्त्र, अनुग्रह कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गया, (बिहार) भारत

की अपेक्षा और अधिक निर्भर हो जाते है। निर्भरता को दो भागों में बांटा जाता है।

1 प्रत्यक्ष या वस्तुनिष्ठ निर्भाता

2 अप्रत्यक्ष या वस्तुगत निर्भरता

प्रत्यक्ष निर्भरता आर्थिक सोत्रों के अभाव, शारीरिक अक्षमता, कार्य सम्पादन में शारीरिक असमर्थता, वैकल्पिक सहायता, व्यवस्थाओं का अभाव तथा पति या पत्नी के हानि से उत्पन्न होती है। अप्रत्यक्ष रूप से परिवारिक सदस्यों पर निर्भरता के कारण भी वरिष्ठ नागरिक वहुध ा दुर्व्यव्यवहार हिंसा सहने के वाध्य होते है। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव परिवारिक अलगाव, बच्चों तथा रिश्तेदारों द्वारा त्यागे जाने को भय, पुत्र द्वारा अन्तिम संस्कार को पूर्ण कराने की इच्छा आदि मनोवैज्ञानिक कारण अप्रत्यक्ष रूप से हिंसा दुर्व्यवहार को प्रोत्साहित करते है।

मानव समाज में लिंग भेद व्यक्ति के प्रस्थिति एवं भूमिका निर्धारण कर एक महत्वपूर्ण आधार रहा है। अधिकतर समाजो में पुरूष और स्त्री के मध्य असमानता पाई जाती है। ये असमानता समुदाय के संस्कृति विशेष की देन है। पुरूष को अपेक्षाकृत उच्चस्थान, अधिकार, सुविधा एवं शक्ति प्राप्त रही है जबकि महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति गौण रही है परम्परागत भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका परिवार के चार दिवारों तक केन्द्रित रही है। उसे स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने का अवसर प्राप्त नहीं था। समाज की प्रथाओं और कुरूतियों ने महिलाओं के जीवन को और अधिक नरकीय बना दिया है। वरिष्ठ महिलाएं विशेष रूप से असहाय और शक्तिहीन बन गयी है। आर्थिक रूप से निराश्रित और शारीरिक रूप से दुर्बल होने के कारण वरिष्ठ महिलाएं अपने जीवन यापन के लिए परिवार के दया की पात्र बन गई है। यदि वरिष्ठ महिला विधवा है तो उसे और भी अधिक कष्ट एवं पालनों का सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों में वृद्ध महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत और अधिक असहाय रही है। यद्यपि आधुनिक युग में महिलाओं की स्थिति में शिक्षा, आर्थिक, स्वावलम्वन और परिवार के बदलते हुए दृष्टिकोण के द्वारा कुछ परिवर्तन हुआ है, किन्तु महिलाओं की स्थिति आज भी पुरूष की तुलना में गौण और असमानता से परिपूर्ण है।

सामाजिक समायोजन वर्तमान समय एवं भविश्य की सामाजिक परिस्थितियों का निर्धारण करते है। परिस्थितियों के अनुरूप चलना तथा परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेना सामाजिक समायोजन है। (1) विकल्प वांछित एवं व्यक्ति की योग्यता, कुशलता एवं क्षमता का घोतक है, और (2) अवांछित एवं व्यक्ति की कमजारी एवं अक्षमता का घोतक है। समायोजन जीवन की निरन्तर गतिमान या गतिशील प्रक्रिया है। जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने एवं पर्यावरण के बीच उपयुक्त सन्तुलन सम्बन्ध स्थापित करने के लिए अपने व्यवहारों में परिवर्तन करता है, सामाजिक समायोजन एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है क्योंकि प्रत्येक सामाजिक प्राणी जीवित रहने के लिए कुछ न कुछ समस्याएं उत्पन्न करती है, अर्थात व्यक्ति का समायोजन जितना अधिक प्रभावशाली होगा उतना ही अधिक चुनौतियों को किस रूप में स्वीकार करना है। इस बात से स्पष्ट होता है उसका समायोजन किस प्रकार से है। समायोजन में ग्रहणशीलता, लगाव, की प्रेरणा, सन्तुलित जीवन, अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता , सहनशीलता, सामंजस्य भाव एवं वस्तुनिष्ठता आदि का गुण पाया जाता है। व्यक्ति अपने सम्पूर्ण जीवन काल में सामजस्य की स्थितियों के साथ कम व अधिक समायोजन करने की क्षमता होती है। समायोजन से सकारात्मक स्थिति निर्मित होती है। समायोजन का स्वरूप, अवधि, प्रभाव और परिणाम व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करते है। समायोजन के स्वरूप सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों रूपों में होता है। इस प्रकार व्यक्ति अपने जीवन काल में विभिन्न परिस्थतियों में समायोजन बार–बार करता है। व्यक्ति के जीवन के अन्तिम पड़ाव में समायोजन व्यक्ति के व्यक्तित्व का अंग हो जाता है। व्यक्ति अपने जीवन काल में सघर्षशील का सामना अधि ाक करता है, और स्वंय को उसके अनुरूप ठालता है। यह वरिष्ठ नागरिक भी इसी प्रक्रिया को दोहराता है लेकिन इसके विपरीत जो व्यक्ति संघर्षशील परिस्थितियों का मुकाबला करने में समर्थ होता है। वह वृद्धावस्था में क्षमताओं के अभाव में भी उन्ही प्रयासों को अपनाना चाहता है, जिससे प्रायः वह असफल हो जाता है। यह असफलता ऐसे व्यक्तियों में निराशा को जन्म देती है।

वरिष्ठ नागरिकों में सामाजिक समायोजन का निम्नाकित बिन्दुओं द्वारा समझा

जा सकता है। जो अधोलिखित है–

1. वरिष्ठ नागरिक 60 वर्ष या उससे अधिक के उम्र का होना।
2. वरिष्ठ नागरिकों में शारीरिक, मानसिक और सांवेगिक क्षीणता होना।
3. वरिष्ठ नागरिक शीघ्रता परिवर्तन को स्वीकार नहीं करता है।
4. वरिष्ठ नागरिक अनुभवों के आधार पर परिस्थितियों को समझना।
5. वरिष्ठ नागरिक में सामाजिक एकाकीपन एवं अगगाव का पाया जाना।
6. वरिष्ठ नागरिक त्यागपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।
7. वरिष्ठ नागरिक पूर्ण रूप से निर्भर होता है।
8. वरिष्ठ नागरिक अनेक रोगों से प्रभावित होने की संभावना अधिक होती है।

भारतीय समाज में स्थापित सामाजिक मूल्य एवं प्रतिमान अपनी उपयोगिता के आधार पर स्थायी एवं परिवर्तित स्वरूप प्राप्त करते है। भारतीय समाज में परिवर्तित होते सामाजिक मूल्यों का सर्वाधिक प्रभाव वरिष्ठ नागरिकों के समायोजित व्यवहार पर पड़ता है। सामाजिक मूल्य समाज स्वीकृत ऐसी इच्छाओं की और लक्ष्य है जिसका अन्तरीकरण, अनुकूलन सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा होता है। सामाजिक मूल्य व्यक्तिपरक मानकों और अकांक्षाओं का रूप धारण कर लेते है। सामाजिक मूल्यों का स्रोत व्यक्ति की अन्तरदृष्टि परानुभूति तथा पारस्परिक सहयोग है जिन व्यक्तियों में यह गुण जितने अधिक होते है, वे मूल्यों का उतना ही अधिक आन्तरीकृत करते है और दूसरों तक पहुचाने में उतना ही अधिक भूमिका का निर्वहन करते है।

वरिष्ठ नागरिकों के समायोजन में सामाजिक मूल्यों के प्रभाव को सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, शारीरिक तथा सांवेगिक आयाम के रूप में समझा जा सकता है। बढ़ती शारीरिक अक्षमता वरिष्ठ नागरिकों में मानसिक एवं सामाजिक परिवर्तन को निर्मित होता है। उनके भावों में परिलक्षित होता है। यह शारीरिक क्षीणता वरिष्ट नागरिकों में पराश्रयता को बढ़ाता है। अलगाव व्यक्ति का अपने समूह से पृथक्करण को सूचित करने वाली स्थिति है। समूह या व्यक्ति से अन्तः सम्बन्ध न रखना व समूह में सह भागिता न देना आदि स्थिति अलगाव को दर्शाती है। अधिक मात्रा में अलगाव मानसिक दुर्वलता को निर्मित करता है। सामाजिक एकीकरण एवं अलगाव की स्थिति के लिए शारीरिक शिथिलता के साथ–साथ जीवन साथी की अनुपस्थिति से जुड़े मुद्दे महत्वपूर्ण कारक है। इसके अतिरिक्त सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश में प्रचलित मूल्यों के प्रति वैचारिकी भी प्रभाव पूर्ण कारक है।

वैश्वीकरण के युग में नवीन मूल्यों का निर्माण परम्परागत मूल्यों का ह्रास एवं सामाजिक अभिमति में तीव्रता प्रत्येक आयु समूह के व्यक्तियों से व्यवहारिक प्रतिमानों में परिवर्तन की माग करती है। वरिष्ठ नागरिकों को सामाजिक मूल्यों एवं प्रतिमानों के साथ समायोजन करने में कठिनाई होती है। सामाजिक सांस्कृतिक दशाओं में जब परिवर्तन होता है। उसका प्रभाव मूल्यों की संरचना पर पड़ता है। समाज, परिवार, विवाह, नातेदारी, आदि के सम्बन्ध में अनेकों नये मूल्य स्थापित हुए हैं। जिनके प्रति सामाजिक अभिमति का प्रभाव कम व अधिक हुए है। वरिष्ठ नागरिकों के द्वारा समाज के महत्वपूर्ण संस्थाओं में होने वाले परिवर्तनों के प्रति सकारात्मक अनुकूलता नहीं पायी जानी है। परिवर्तन मूल्यों का आन्तरीकरण वे समाज तथा व्यक्ति से सामंजस्य बनाये रखने के लिए करते हे। आधुनिकता के दौर में सामाजिक मूल्यों से समायोजन करना एवं स्वंय में परिवर्तन करना अनिवार्य हो गया जिसे वरिष्ठ नागरिक सामान्यतः स्वीकार नहीं करते है। व्यक्ति और समाज में मूल्यों का जितना अधिक आन्तरीकरण होगा उतना ही अधिक सामंजस्य स्थापित होगा।

उत्तर आधुनिकता में तीव्र गति से परिवर्तित होते सामाजिक मूल्यों से सामंजस्य स्थापित करने में उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों का समाधान परम्परागत भारतीय आश्रम व्यवस्था के सामाजिक मूल्यों के रूप में पुर्नस्थापना आवश्यक है। भारत में जहा एक ओर वरिष्ठ नागरिकों की संख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। वही दूसरी ओर औद्योगीकरण, नागरीकरण एवं पश्चिमीकरण से नई पीढ़ी के बच्चों में माता–पिता से जोड़े रखने वाले पुराने संस्कारों के वजाय नई सोच उभरने के कारण वरिष्ठ नागरिकों की स्थिति अत्पन्त दयनीय होती जा रही है। वरिष्ठ नागरिक नई पीढ़ी के समाजीकरण तथा उनमें सामाजिक सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों के ज्ञान व अनुभव को हस्तान्तरित करने में महत्वपूर्ण योगदान देते रहे है, परन्तु तकनीकी

विकास के कारण नवीन पीढ़ी की जीवन पद्धति तथा मूल्यों में होने वाले परिवर्तनों ने वरिष्ठ नागरिकों की सामाजिक प्रस्थिति में काफी परिवर्तन किया है।

वरिष्ठ नागरिकों में आयु के अनुरूप स्वंय को परिवर्तित करने की भावना क्रमशः विकसित होती है। जो सकारात्मक परिस्थितियों को जन्म देती है। वरिष्ठ नागरिकों में उत्पन्न होने वाली क्षीणता का अनुभव केवल वरिष्ठ नागरिकों की समझ का विषय न होकर अन्य सदस्यों के लिए भी आवश्यक है, जो उनके सम्पर्क में होने है वरिष्ठ नागरिकों के विचारों और मूल्यों में परिवर्तन आसानी से नहीं होता वल्कि कुछ समयावधि का आग्रह है। वरिष्ठ नागरिक अपने जीवन के अन्तिम पड़ाव में संवेगात्मक रूप से शिथिलता अनुभव करना है। आनन्द एवं दुखदायी परिस्थितियों के प्रति संवेगात्मक नियन्त्रात्मक व्यवहार में कठिनाई का अनुभव करते है। वरिष्ठ नागरिकों में नवीन सामाजिक मूल्यों के प्रति प्रत्यक्षः विरोध की स्थिति भी परिलक्षित होती है जो पूर्व स्थापित मान्यताओं की सुरक्षा के सन्दर्भ में होते है, परन्तु असफलता के कारण संवेगों का प्रकटीकरण होता है, जो प्रायः असन्तुलित परिस्थितियों का जन्म देते है।

उत्तर आधुनिकता के आगमन ने सबसे अधिक प्रभाव पारिवारिक जीवन पर डाला है। परिवार के सदस्यों के अन्तसम्बन्ध निरन्तर आत्मीयतापूर्ण न होकर स्वार्थवादिता से अभिप्रेरित हो गये। परिवार के पुरातन पीढ़ी और नवीन पीढ़ी की आकांक्षाएं और भूमिकाएं भिन्न–भिन्न होने लगे है।

परिवार में युवा पीढ़ी अपेक्षाकृत अधिक जीविकोपार्जन में संलग्न होकर परिवार में निर्धारण भूमिका का निर्वाह करने लगे जबकि वरिष्ठ नागरिक आर्थिक रूप से निरन्तर निर्बल होता चला। वरिष्ठ नागरिकों को समय के साथ समायोजन करने की जरूरत है। जिससे उनकी परिवार में सम्मान बना रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Jain, Sushila (2006), Globalization and the Aged, in A.K. Joshi (Ed), Older Person in india, Social Publi cations, New Delhi; PP-33-46.
2. Joshi, A.K. (2006), Older Persons in India, Social Publications, New Delhi.
3. India Today (2005) : अन्तिम दौर में मिला अंधेरा, 2 Nov (2005), New Delhi.
4. नवभारत, (2006) 'बुढापे में परिवार का प्यार चाहिए तो कमाते रहिए, 15 मई, नई दिल्ली।
5. Chaudhary, D.P (1992), Aging and the Aged; A Source book, Inter india Publication, New Delhi.
6. शर्मा, के. एल. 2006, भारतीय सामाजिक संरचना एवं परिर्वतन–रावत पब्लिकेशन, जयपुर, नई दिल्ली।
7. Old Age, N. Oxford English dictio nary Online Sept(2013) Oxford Uni versity Press.
8. शर्मा जी. एल. 2015– सामाजिक मुर्दे–रावत पब्लिकेशन जयपुर, नई दिल्ली।

*****